कुदरत के मेहमान

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

अतिथि देवो भव भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र है। हमारे घर में अतिथि का सम्मान होता है। जहां पर अतिथियों को सम्मान होता है वहां देवता का वास होता है। हमारे देश में विदेशी सैलानी अधिक आते हैं। उनका यहां पर सम्मान होता है। इससे देश की आय भी बढ़ती है और दो संस्कृतियों का मिलन भी होता है। एक सौ तीस करोड़ की जनसंख्या भारत में रह रही है। हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी ने सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास का नारा दिया है। यह नारा देशवासियों को जोड़ने वाला है। सभी देशवासी परस्पर प्रेम से रहें भाईचारा बना रहे जिससे देश की उन्नति हो सके। चौरासी लाख जीव योनियों में सभी प्राणी एक–दूसरे के साथ प्रेम से रहते हैं।

वनों में रहने वाले जीव–जन्तुओं को जब तक नुकसान न पहुंचाया जाये तब वे हिंसक नहीं बनते हैं। मानव ही ऐसा प्राणी है जो कुदरत के बनाये नियम को तोड़ता है। अन्य जीव–जन्तु प्रकृति के नियम का पालन करते हैं। प्राकृतिक जीव किसी के जीवन में हस्तक्षेप नहीं करते। सूर्य, चन्द्रमा, ऋतुओं का परिवर्तन, दिन–रात का होना, कालचक्र का चलना स्वयं हो रहा है। वहां अतिक्रमण नहीं होता। कुदरत का कानून यह है कि प्रकृति के नियम का पालन करो। जो शास्वत नियम हैं उनको न तोड़ो। किसी भी वस्तु का त्यागपूर्वक उपभोग करो। किसी के हम की चीज को न लो। सबको अपने–अपने कार्य करने दो। हमें किसी के जीवन में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। ऐसा करने से एक स्वस्थ परम्परा गड़बड़ हो जाती है।

अतिथि वह होता है जो बिना बताये किसी के घर आकस्मिक आय जाये। भारतीय संस्कृति में अतिथि देवो भव यह वाक्य बहुत ही आदरणीय है। अतिथि से तात्पर्य किसी मेहमान से है और देवो भव का तात्पर्य है देव के समान होना। कहने का भाव यह है कि अतिथि भगवान के समान होता है। और वह पूजनीय होता है। प्रारंभ से ही हमारे देश में अतिथि को भगवान समझा गया है। जब किसी के घर कोई अतिथि आ जाता है तो घर में जो कुछ भी है उसी

से उसका सम्मान करना चाहिए। हमारे देश पर अनेक जातियों ने बर्बरता पूर्ण आक्रमण किया। लेकिन हमने उनका भी स्वागत किया। ऐसे बर्बर आक्रमण झंझावात की तरह थे। इनका प्रभाव कुछ समय तक रहा फिर समाप्त हो गया।

भारतीय जीवन की विशालता ने उन सबको या तो आत्मसात कर लिया या तो वे भारतीय संस्कृति में समा गये। भारतीय संस्कृति की आत्मा अपरिवर्तित रही। आधुनिक युग में यह कहावत है कि अतिथि भगवान के समान होता है। बदलते जमाने के साथ इंसान बहुत व्यस्त हो गया है। फिर भी आज हम सभी के घर पर अतिथि जरूर आते है और उनका स्वागत सत्कार करना हमारा कर्त्तव्य होता है, क्योंकि इसको हमने परंपरागत रूप से प्राप्त किया है। भारतीय संस्कृति के संस्कार में समाहित है। जब किसी के घर कोई अतिथि आ जाता है तो सबसे पहले उसे जल देकर हाथ, मुंह, पैर इत्यादि का प्रक्षालन कराते है, इसके बाद उसके जलपान की व्यवस्था करते है। फिर घर में जो कुछ भी प्रसाद रसोई में बना रहता है, उससे उसका भोग लगवाते है और उसके रहने की उचित व्यवस्था कर अपना कर्त्तव्य पूर्ण करते है। वास्तव में अतिथियों का सम्मान करना चाहिए। क्योंकि अतिथि हमेशा के लिए नहीं आते बल्कि कभी–कभी आते है।

इस संसार में सभी एक–दूसरे के लिए अतिथि ही है। एक–दूसरे के घर जाने से सम्बन्ध और प्रगाढ़ होता है। इससे बन्धुत्व बढ़ता है। भारतीय संस्कृति में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना इसी का विस्तृत रूप है। आजकल के युग में ग्लोबलाईजेशन के द्वारा वसुधैव कुटुम्बकम् को बताया जा रहा है। अन्तर केवल इतना ही है कि वसुधैव कुटुम्बकम् विश्व बन्धुत्व को बढ़ावा देता है। जबकि ग्लोबलाइजेशन विश्व का बाजारीकरण है। आजकल के जमाने में हम देखे तो अतिथि के रूप में बहुत सारे ठग और ढ़ोंगी भी घर पर आ सकते है। हमें इस तरह के लोगों को पहचानना चाहिए। आजकल के जमाने में लोग अतिथि का बहाना बनाकर घर में घुसकर हमें नुकसान भी पहुंचा सकते है।

संस्कृत में यह कहावत है– **अज्ञातकुलशीलस्य वासो देयो न कस्यचित्** अर्थात् अज्ञात कुल और शील वाले व्यक्तियों को घर में कभी भी नहीं रखना चाहिए। अगर कोई ऐसे व्यक्तियों को अपने घर में रखता है हो निश्चित ही ऐसे अज्ञात कुलशील वाले व्यक्ति उसे नुकसान पहुंचा

सकते है। अतः अतिथि वही होता है जिसका किसी न किसी रूप में पारिवारिक सम्बन्ध हो। परिवार का कोई व्यक्ति उसे जानता–पहचानता हो। ऐसे व्यक्ति से ही मैत्रीभाव और पारिवारिक सम्बन्ध रखना चाहिए। कभी–कभी आवश्यकता पड़ने पर कोई व्यक्ति किसी के घर अतिथि के रूप में जाता है। ऐसे व्यक्ति का सम्मान अवश्य होना चाहिए। महाकवि कालीदास ने महाराज रघु की उदारता का वर्णन किया है। महाराज रघु बड़े ही दानी राजा थे। वह दान में सबकुछ न्यौछावर कर देते थे। एक बार वरतन्तु ऋषि के शिष्य कौत्स अपनी सम्पूर्ण विद्या समाप्त कर महाराज रघु के पास पधारे और महाराज रघु ने कौत्स को प्रणाम कर आने का कारण पूछा और कौत्स की मनोकामना को पूर्ण किया। अतिथियों का सम्मान हमारे देश की प्राचीन परम्परा रही है।